JULY TO SEPTEMBER 2015-16

आगामी तीन माह की प्रस्तावित गतिविधियां

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	सोयाबीन	इंमेजाबाइपर + इमेजामाक्स द्वारा खरपतवार प्रबंधन का आकलन	0.8	04
2.	सोयाबीन	सुनिश्चित सिंचाई अवस्था में सोयाबीन आधारित फसल पद्धति का आकलन	0.8	04
3.	धान	तना छेदक कीट के समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.8	04
4.	धान	भूरा कंडवा रोग के समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.8	04
5.	धान	झुलसा रोग के समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.8	04
6.	प्याज	प्याज की उन्नत किस्म का आकलन	0.8	04
7.	सोयाबीन	रेज्ड बेड प्लांटर द्वारा सोयाबीन की बोनी का आकलन	1.0	05
8.	मछली	संचय पूर्व तालाब की तैयारी से जिविका पर प्रभाव	1.0	04
9.	धान	धान की कतार बोनी में फसल प्रबंधन का आकलन	0.8	04
योग			7.6	37.0

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	धान	इंदिरा बारानी धान - 1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	05	12
2.	सोयाबीन	जे.एस. 97-52	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	05	12
3.	सोयाबीन	जे.एस. 97-52	सीड कम फर्टीलाइजर ड्रील द्वारा सोयाबीन की बुवाई	05	12
4.	जिमीकंद	गजेन्द्र	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.4	05
योग					

विस्तार गतिविधियाँ

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	अरहर	LRG-41	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	05	12
2.	उड़द	PU-31	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	05	12
योग				10	24

विस्तार गतिविधियाँ

क्र.	विषय	संख्या	लाभार्थी
1.	वैज्ञानिकों का खेतों में भ्रमण	15	30
2.	केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	100	100
3.	सब्जी एवं फल प्रसंस्करण प्रशिक्षण	1	30
योग		116	160

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	लाभार्थी
1.	फसल उत्पादन	2	5	80
2.	पौध संरक्षण	2	5	88
3.	उद्यानिकी	2	5	87
4.	मृदा विज्ञान	2	5	86
5.	पशुपालन	2	5	84
6.	मत्स्यकी	2	5	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	2	5	82
योग		14	35	600

बीजोत्पादन कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, नेवारी प्रक्षेत्र में खरीफ 2015-16 में 11.8 हेक्टे. रकबा में निम्न बीजोत्पादन कार्यक्रम लिया जा रहा है।

क्र.	विषय	किस्म	उत्पादन होने वाला बीज का प्रकार	रकबा (है.)
1.	धान	इंदिरा बारानी धान - 1	आधार	1.6
2.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	आधार	4.4
3.	सोयाबीन	जे.एस.95-7	प्रमाणित	1.2
4.	सोयाबीन	जे.एस.95-7	पजनक	0.8
5.	अरहर	आशा	आधार	2.0
6.	मूंग	HUM-12	पजनक	1.8
योग				11.8

कृषि महाविद्यालय में अध्यापन

क्र.	अधिकारी का नाम	पदनाम	महा. वि. में अध्यापन	वर्ष	लाभार्थी
1.	कु. मनीषा खापर्डे	विषय वस्तु विशेषज्ञ (मत्स्यकी)	संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र कवर्धा	तृतीय	01
			कृषि महाविद्यालय बेमेतरा	तृतीय	01
योग					2

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला - कबीरधाम (छ.ग.)
पिन - 491995
फोन / 07741 - 299124
E-mail : kvkkawardha@yahoo.in

बुक पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. .....

उन्नत कृषि
समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला - कबीरधाम (छ.ग.)

अंक - 22 | त्रैमासिक पत्रिका, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, 2015 | वर्ष - 8

सपांदक मंडल

संरक्षक : डॉ. एस. के. पाटिल
कुलपति, इं.गां.कृ.विश्वविद्यालय
रायपुर छ.ग.

मार्गदर्शक : डॉ. एम.पी. ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवाएँ
इं.गां.कृ.वि.रायपुर छ.ग.

प्रेरणा स्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
आंच.परियोजना निदेशक
जोन -7 (भा.कृ.अनु.परि.) जबलपुर

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ.बी.पी.त्रिपाठी
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला - कबीरधाम

संपादक : डॉ. नूतन रामटेके
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन

सह संपादक :
इं.टी.एस.सोनवानी
कृषि अभियांत्रिकी

श्रीमती पमिला कांत
उद्यानिकी

श्री बी.एस.परिहार
सस्य विज्ञान

कु.मनीषा खापर्डे
मात्स्यिकी

श्री वाई.के.कौशिक
कार्यक्रम सहायक

श्रीमती स्वाती शर्मा
कार्यक्रम सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा प्रशानिक भवन, बीज भण्डारण गृह का लोकार्पण एवं कृषक संगोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के नेवारी में नवनिर्मित प्रशासनिक भवन एवं बीज भण्डारण गृह का लोकार्पण माननीय राज्यपाल श्री बलराम जी दास टण्डन राज्यपाल छ.ग. के मुख्य आतिथ्य,श्री बृजमोहन अग्रवाल माननीय कृषि मंत्री छ.ग. शासन की अध्यक्षता, तथा श्री मोतीराम चन्द्रवंशी माननीय संसदीय सचिव एवं विधाय पण्डरिया, माननीय डॉ. एस.के पाटिल, कुलपति,इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर श्री अजय सिंह,अपर सचिव एवं कृषि उत्पादन आयुक्त, श्री संतोष पटेल अध्यक्ष जिला पंचायत कबीरधाम, एवं श्रीमती कमला बाई कुर्रे, सरपंच, ग्राम पंचायत नेवारी की विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरूआत माननीय राज्यपाल ने प्रशासनिक भवन एवं बीज गोदाम का लोकार्पण कर किया। माननीय राज्य पाल व कृषि मंत्री ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने हेतु प्रक्षेत्र में आम के पौधे रोपे। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सोयाबीन बोने की इंदिरा सोयाड्रील तथा मल्टी क्राप सिडड्रील का जीवंत प्रदर्शन का अवलोकन भी सम्मानिय आतिथियों ने किया। माननीय राज्यपाल एवं मंत्री जी ने इस अवसर पर जिले के 5 प्रगतिशील कृषकों को शाल, श्रीफल व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मान किया, कृषि विभाग द्वारा आत्मा योजनांतर्गत दो कृषकों विकासखण्ड स्तरीय कृषक पुरस्कार दस हजार रूपये का चेक वितरण किया गया। उद्यानिकी विभाग द्वारा दो कृषकों को सब्जी मिनीकीट तथा एकीकृत जलग्रहण मिशन अंतर्गत छः ग्रामो के 66 कृषकों को एक लाख सत्यासी हजार सात सौ सन्तानबे रूपये के कृषि यंत्र जिसमें स्प्रेयर, पावर स्प्रेयर, हस्तचलित तथा शक्तिचलित उड़ावनी पंखा, मार्कर सायकिल व्हील हेतु का वितरण किया गया, आदिवासी उपयोजनांतर्गत 12 कृषकों को उड़द तथा 12 कृषकों का अरहर मिनीकीट का वितरण किया गया है। कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के वैज्ञानिको द्वारा लिखित तीन बुलेटीन का भी विमोचन माननीय राज्यपाल ने किया। जिले के एक कृषक को फार्मर फेलोशिप एवार्ड प्रदाय किया गया। इस संगोष्ठी मह प्रदर्शनी में जिले के कृषि,उद्यानिकी, पशुपालन, कृषि अभियांत्रिकी विभाग तथा 5 निजी कंपनियों तथा बिलासपुर, भाटापारा, राजनांदगांव कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा स्टाल लगाया गया। इस मेले में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्दो के अधिकारी, वैज्ञानिकगण तथा कबीरधाम जिले के प्रभारी कलेक्टर श्री विपिन मांझी अन्य सभी अधिकरी/कर्मचारियों प्रेस कर्मी तथा लगभग 2500 कृषको ने भाग लिया।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक संपन्न

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं राजनांदगांव के आठवीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 04.05.2015 सोमवार को जिला पंचायत कवर्धा के सभागार में सम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ.एस.पी. ठाकुर, निदेशक विस्तार सेवाएं, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, अध्यक्षता डॉ. आर.के. द्विवेदी, अधिष्ठाता, संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कवर्धा, श्री नागेश्वर लाल पाण्डेय, उपसंचालक कृषि जिला - कबीरधाम, श्रीमती गोपिका गवेल, उपसंचालक कृषि जिला - राजनांदगांव तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा और राजनांदगांव के वैज्ञानिक

JULY TO SEPTEMBER 2015-16

विगत तीन माह की गतिविधियां

सलाहकार समिति के सदस्य एवं भूतपूर्व प्रबंध मण्डल सदस्य, श्री विषेशर दास साहू, श्रीमती आशा वर्मा, श्री अशोक चौधरी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरूआत माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर की गयी। कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के कार्यक्रम समन्वयक, डॉ.बी.पी.त्रिपाठी द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। एवं संक्षिप्त में कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा कबीरधाम जिले में किये जा रहे कार्यो से संबंधित जानकारी दी गई। डॉ. आर.के. द्विवेदी, अधिष्ठाता, संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कवर्धा ने समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने की सलाह दी तथा कृषि के उप उत्पादों से खाद बनाकर उपयोग करने तथा समन्वित उर्वरक प्रबंधन पर जोर दिया।

डॉ. एम.पी.ठाकुर, निदेशक विस्तार सेवाएं, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर ने कहा कि फसल सुरक्षा उपायों को अपनाकर हम बीजो, बीमारियों से होने वाले नुकसान से बच सकते है, इसके लिये जैविक उत्पादो को अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए तथा समन्वित उर्वरक प्रबंधन के कारकों हरी खाद, कम्पोष्ट, नील हरित शैवाल, एजोटोबेसिलस, राइजोबियम,एजेटोबैक्टर, ट्राइकोडर्मा आदि का प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ दलहन फसल लगाने तथा फसल चक्र अपनाने पर जोर दिया। उन्होने कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयकों को गुणवत्ता वर्धन, शहद प्रसंस्करण आदि पर आवश्यक कार्य करने हेतु निर्देशित किया। इसके बाद डॉ.बी.पी. त्रिपाठी एवं डॉ. एच.एस.तोमर के द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं राजनांदगांव की वर्ष 2014 -15 की गतिविधियों, वर्ष 2015 - 16 के प्रस्तावित कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती स्वाति शर्मा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री ईश्वरी साहू विषय वस्तु विशेषज्ञ, कीट विज्ञान, कृषि विज्ञान केन्द्र, राजनांदगांव ने किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर कृषक प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा पर्यावरण दिवस 05 जून 2015 को मनाया गया। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के अधिकारी एवं कर्म चारियों द्वारा पौध रोपण किया गया एवं पर्यावरण संरक्षण पर कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया तथा कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कृषि में उपयोग होने वाले रसायनिक उर्वरको व कीटनाशकों के द्वारा पर्यावरण पर होने वाले दुष्प्रभाव की विस्तृत जानकारी दी गई, तथा कृषकों को जैविक खेती के लाभ से अवगत कराया गया जिससे मृदा संरचना व उर्वरकता में सुधार हो साथ ही साथ पर्यावरण भी स्वच्छ व संरक्षित रहे जिससे पर्यावरण में निरंतर हो रही त्रासदी से बचा जा सके। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। यहां पर 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आधारित है अतः जागरूक कृषकों के माध्यम से ही पर्यावरण से स्वच्छ व संरक्षित करने का संदेश आम जनता तक पहुंचा सकते है। जिससे हम अपनी आने वाली पीढ़ीयों को स्वच्छ पर्यावरण का उपहार दें सकें।

खरीफ में फसलों का समन्वित प्रबंधन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के वैज्ञानिको द्वारा किसानो को खरीफ पूर्व कृषको के खेतो पर भ्रमण कर खरीफ में लगने वाली फसलों जैसे - धान, सोयाबीन, अरहर, मूंग, उड़द, में समन्वित पौध संरक्षण की सलाह दी गई, जिसके अंतर्गत धान के बीजों को 17 प्रतिशत नमक के घोल में डालकर ठोस बीजों का चुनाव करें तथा चयनित बीजों को दो बार स्वच्छ पानी से धोकर फफूंद नाशक दवा कार्बेन्डाजिस + मैन्कोजेब मिश्रित दवा 3 -4 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें एवं बुआई पूर्व बीजो का अंकुरण प्रतिशत का परीक्षण भी करें। साथ - साथ जमीन में पर्याप्त नमी होने पर ही बुआई करें। तथा दलहनी फसलों को बुआई पूर्व राइजोबियम कल्चर से अवश्य उपचारित करें। धान में नर्सरी पानी की उपलब्धता होने पर 15 जून तक अवश्य लगायें। एवं गन्ने की फसल में तना बेधक कीट का प्रकोप दिखने पर क्लोरोंएट्रानीलिप्रोल दवा 150 मि.ली. प्रति हे.की दर से छिड़काव करें। एवं बरसात की फसल हेतु कद्दूवर्गीय सब्जियों के बीजों की बुआई करें इसके लिये सब्जियों की पौधशाला हेतु नर्सरी निर्माण, भूमि उपचार एवं क्यारियों में बीजों की बुआई करने की सलाह दी गई।

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	लाभार्थी
1.	फसल उत्पादन	2	5	85
2.	पौध संरक्षण	2	5	87
3.	उद्यानिकी	2	5	82
4.	मृदा विज्ञान	2	5	86
5.	पशुपालन	2	5	86
6.	मत्स्यकी	2	5	85
7.	कृषि अभियांत्रिकी	2	5	82
योग		14	35	593

विस्तार गतिविधयाँ

क्र.	विषय	संख्या	लाभार्थी
1.	वैज्ञानिको का खेतो में भ्रमण	10	10
2.	केंन्द्र पर कृषको का भ्रमण	30	30
योग		40	40

जुलाई माह में

फसलोत्पादन एवँ पौध संरक्षण

- धान की रोपाई कतार में करें। धान में कतार से कतार की दूरी किस्म के अनुसार 15–20 से.मी. की दूरी पर रखें।
- रोपा धान में नींदानाशक दवा अंकुरण पूर्व (आक्सीडायजिल, एनीलोफास, ब्यूटाक्लोर, पेन्डीमेथीलिन) तथा अंकुरण के 20–25 दिन पश्चात् इथाक्सी सल्फयूरान, साइहेलोफास ब्यूटाइल का छिड़काव करें।
- सोयाबीन की फसल 20–25 दिन की हो तथा नींदा का प्रकोप ज्यादा दिख रहा हो तो फिनाक्सीप्रॉप (क्विप सुपर), इमेझाथायपर (परस्यूट, लगाम) की अनुशंसित मात्रा का छिड़काव करें।
- छिड़काव पध्दति से धान की बुवाई पहली वर्षा आने पर तुरंत करें। रोपाई के लिए 15 दिन पहले हरी खाद को जमीन में मिला दें फिर मचाई करें।
- सीधे बोये गये धान के खेत में पानी की उपलब्धता के अनुसार बियासी करें। छिड़काव एवं कतार बोनी में नींदानाशक दवा का उपयोग करें।
- सोयाबीन, अरहर, अरण्डी, तिल, मूंगफली, कपास की बुवाई 15 जुलाई तक पूरी करें।
- मेड़ पर दलहनी, तिलहनी एवं चारे वाली फसलों की बुवाई।

उद्यानिकी

- टमाटर, बैगन, मिर्च, फूलगोभी की रोपणी तैयार करें।
- फूलगोभी की अगेती किस्म का तैयार पौध की रोपाई करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों की बोआई करें तथा टमाटर, बैगन मिर्च आदि सब्जियों के तैयार पौधों की रोपाई करें।
- फ्रेंचबीन, भिण्डी, गवांर फल्ली, बरबट्टी की बुवाई करें।
- आम, आंवला, अमरुद, बीकू, कटहल आदि फल वृक्षों में खाद एवं उर्वरक देने का कार्य करे।
- नये फल वृक्षों को लगाने का कार्य पूरा करें।
- आम, अनन्नास, नींबू, जामुन आदि के विभिन्न परिरक्षित पदार्थ तैयार करें।
- करौंदा से जेली, जैम, मुरब्बा एवं अचार आदि बनाऐं।
- फल वृक्षों के पास बने थालों की भरपायी करें एवं बगीचे में जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- केले के पौधों की रोपाई का कार्य आरंभ करें। पुराने केले के पौधों के बगल में निकलने वाले सकर को काट दें।
- तीखुर, लेमनघास, ब्राम्ही, सतावर, सर्पगंधा, कस्तूरी भिण्डी आदि की बुवाई करें।
- पूर्व में लगाई गई सफेद मूसली की निंदाई गुड़ाई करें। मेथा की पहली कटाई करें।

पशुपालन

- पशुओं को हरा चारा खिलाया जाये तथा गलघोंटू बीमारी से बचाव हेतु माह के अंत तक टीकाकरण अवश्य करा दें।
- प्रतिदिन दूध निकालने के पूर्व दूध की बाल्टी की सफाई क्लोरीन के पानी से या गरम पानी से करें।
- चारे के लिए मक्का की दूसरी फसल बोने का उचित समय है। बीज की मात्रा प्रति एकड़ 30 कि.ग्रा. प्रयोग करनी चाहिए।

अगस्त माह में

फसलोत्पादन एवँ पौध संरक्षण

- हरी काई का प्रकोप दिखे तो पानी को खेत से निकाल देवें। खेत में जिस जगह से पानी अंदर जाता है, वहाँ कापर सल्फेट (नीला थोथा) को पोटली में बांधकर रखें।
- रोपा लगाने के पूर्व धान के थरहा की जड़ों को क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. दवा का 1 मिली/लीटर पानी तथा 2 किलो यूरिया मिलाकर 3–4 घंटे डुबोकर रोपा लगायें।
- गन्ना फसल में पायरिला नामक कीट का प्रकोप दिखे तो मेलाथियान 5प्रतिशत धुल,40 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से भूरकाव करें।
- धान की रोपाई 10 अगस्त एवं बियासी एवं चलायी कार्य 15 अगस्त तक पूर्ण करें।
- धान, तिल, कपास, मक्का एवं अरण्डी फसलों में नत्रजन की अनुशंसित मात्रा का उपयोग करें।

उद्यानिकी

- नये फल बाग का रोपाई यदि नही पूरा कर पाये है तो उसे पूरा करें।
- आम एवं बेर में उपरोपण, कलिकायन तथा शीर्ष कार्य करें।
- नर्सरी में बडिंग एवं ग्राफ्टिंग द्वारा नये –नये पौधे तैयार करने का कार्य चालू रखें।
- नीबूवर्गीय पौधों पर कैंकर रोग प्रकट होने पर प्रति जैविक स्ट्रेप्टोसायक्लिन (500 मि.ग्रा./लीटर) ताम्रयुक्त दवा (3 ग्राम/लीटर) का सेण्डोविट आर्द्रक (3 मि.ली./लीटर) के साथ मिलाकर सूखे दिनों में दोपहर के बाद छिड़काव करें।
- अश्वगंधा की रोपाई करें। अन्य औषधीय फसलो में निंदाई गुड़ाई कर खाद डालें।

पशुपालन

- गाय, भैंस, भेड या बकरी यदि गर्भी में आयी हो तो उन्हे प्राकृतिक या कृत्रिम रुप से गर्भित करा दिया जाये। पशुओं में किसी भी तरह के रोग के लक्षण दिखे तो अपने नजदीकी पशु चिकित्सालय की मदद ले।
- मुर्गी घर के विशावन को सूखा एवं धूल रहित रखें।
- मुर्गियों के लिए संतुलित आहार की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- पशुओं को तालाब का गन्दा पानी न पिलाये।

सितम्बर माह में

फसलोत्पादन एवँ पौध संरक्षण

- धान की फसल में झुलसा नाव आकार के धब्बे दिखते ही ट्राइसाइक्लाजोल (1ग्राम प्रति लीटर पानी)/टेबुकोनाजोल (1.5 मि.ली./ली. पानी) में से किसी एक फूंदनाशक दवा का छिड़काव करना चाहिए। यदि संभव हो तो छिड़काव हेतु साफ पानी का उपयोग करें तथा छिड़काव दोपहर तीन बजे के बाद करें तो रोग का प्रभवी नियंत्रण होगा।
- धान में जीवाणु जनित झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 6 ग्राम प्रति एकड की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करें। यदि पानी उपलब्ध हो तो खेत से पानी निकालकर 3–4 दिन तक खुला रखें तथा 25 किलो पोटाष प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करें।
- धान में पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण हेतु हेक्साकोनाजोल दवा का छिड़काव पानी की सतह के पास वाले पौधें के भागों पर करना चाहिये।
- धान में किस्म के अनुसार गभोट अवस्था में यूरिया की शेष मात्रा कतार में डालें।
- धान तथा अन्य खरीफ फसलों में आवष्यकता अनुसार नींदा नियंत्रण करें।
- उड़द व मूग में भभूतिया रोग लगने पर कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम/ली. पानी) या डिनोकेप (1 मि.ली./पानी) में से किसी एक दवा का छिड़काव करें।
- सोयाबीन में जीवाणुजनित स्फोट रोग दिखने पर स्ट्रेप्टोसायक्लिन (300मि.ग्रा.) ताम्रयुक्त दवा (3 ग्राम) का छिड़काव करना चाहिये। सह छिड़काव 10–12 दिन के अन्तराल पर छिड़काव दोहराना चाहिये।
- वृक्षों में बोर्डो पेस्ट लगाएं।
- इस माह में सोयाबीन की फसल में गर्डल बीटल कीडे के प्रकोप की संभावना रहती है। अतः कीट पर विषेश निगरानी करें व नियंत्रण करें।

उद्यानिकी

- गोभी की अगेती फसल में निंदाई गोड़ाई कर नत्रजन 40 किलोग्राम प्रति हैक्टर दें।
- अदरक एंव हल्दी में मिट्टी चढ़ाये व पानी दें।
- आम में बोर्डो पेस्ट का लेप लगायें।
- पुष्प प्राप्त करने के लिए गैलेडियोलाई के कंदो की बुआई करें। गोबर खाद के साथ 10 ग्राम नत्रजन 20 ग्राम स्फुर एवं 20 ग्राम पोटाष प्रति वर्ग मीटर में छिड़काव करें।
- गेंदा में पिचिंग (फुनगी की कटाई) की प्रकिया अपनावें।
- सभी औषधिय पौधों की कीट व्याधियों से रक्षा करें। वर्षा न होने की दशा में सिंचाई करें।

पशुपालन

- भैंसों में व्यात का समय हो गया है। गर्भवती भैंसों को पौष्टिक दलहनी चारे के अलावा खनिज लवण व विटामिन युक्त आहार दें।
- भेड़–बकरियों को नमी युक्त फर्श पर न रखा जाये।
- मुर्गियों को संतुलित आहार की व्यवस्था सुनिश्चित करें।